



# गेहूँ एवं जौ संदेश



वर्ष 2

अंक 2

जुलाई-दिसम्बर, 2013



फोटो: राजेन्द्र कुमार शर्मा

## गेहूँ की नवीनतम प्रजाति डी.बी.डब्ल्यू. 88

रतन तिवारी

केन्द्रीय प्रजाति विमोचन समिति द्वारा गेहूँ की प्रजाति डी.बी.डब्ल्यू. 88 को उत्तर पश्चिमी मैदानी क्षेत्र (पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, पश्चिमी उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड के तराई क्षेत्र, जम्मू-कश्मीर के जम्मू और कठुआ जिले एवं हिमाचल प्रदेश के ऊना जिला एवं पोंटा घाटी) में सिंचित एवं समय से बीजाई के लिए अनुमोदित किया गया है। सस्य परीक्षणों में उपज के दृष्टिकोण से यह प्रजाति एच.डी. 2967, डी.बी.डब्ल्यू. 17, डी.पी.डब्ल्यू. 621-50 एवं डब्ल्यू.एच. 1105 से बेहतर पायी



फोटो: रतन तिवारी

गई है। इस प्रजाति की औसत उपज 53.9 कुंतल/है. तथा अधिकतम उपज क्षमता 69.1 कुंतल/है. है। अगर बीजाई में थोड़ी देर हो जाये तो अन्य प्रजातियों की तुलना में इस प्रजाति में उपज में होने वाली गिरावट कम होती है अतः किसी वजह से बीजाई में थोड़ा विलम्ब हो जाये तो इस प्रजाति में ज्यादा नुकसान नहीं होता है। इस प्रजाति में पीला रतुआ एवं भूरा रतुआ के महत्वपूर्ण पैथोटाइस के प्रति रोग रोधकता का गुण है। इसमें करनाल बंट एवं फ्लैग-स्मट के प्रति भी रोग रोधकता है। इस प्रजाति में एक और गुण है कि आरंभ में अच्छी फसल बढ़वार एवं ज्यादा फुटाव की वजह से यह खरपतवारों को बढ़ने से रोकती है तथा बढ़वार की वजह से तूड़ी की मात्रा भी ज्यादा उपलब्ध होती है। पौधे की औसत ऊँचाई 99 सें.मी. (79-121 से.मी.) है। गुणवत्ता की दृष्टि से देखें तो इसमें प्रोटीन की मात्रा अच्छी (>12%) है, चपाती भी अच्छी बनती



फोटो: रतन तिवारी

है। इसका चपाती स्कोर (7.66), हैक्टोलीटर वजन (76.4), पूर्ण ग्लूकन (ग्लू-1) स्कोर (10/10) और प्रति हजार दानों का औसत वजन 40 ग्रा. (37-47 ग्रा.) है।

## देर से बुआई के लिए गेहूँ की नई प्रजाति

### डी.बी.डब्ल्यू. 90

रविश चतरथ

गेहूँ की प्रजाति डी.बी.डब्ल्यू. 90 को उत्तर पश्चिमी मैदानी क्षेत्र (पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, पश्चिमी उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड के तराई क्षेत्र, जम्मू-कश्मीर के जम्मू और कटुआ जिले एवं हिमाचल प्रदेश का ऊना जिला एवं पोंटा घाटी) में सिंचित एवं देर से बुआई के लिए अनुमोदित किया गया है। सस्य परीक्षणों में उपज के दृष्टिकोण से इसकी उपज सबसे अच्छी



फोटो: रविश चतरथ

जाँचक प्रजाति से 7.6 प्रतिशत अधिक उपज पायी गई। यह प्रजाति अन्य जाँचक प्रजाति जैसे कि पी.बी.डब्ल्यू. 373 (10.74 प्रतिशत), डब्ल्यू.एच. 1021 (7.75 प्रतिशत) एवं पी.बी. डब्ल्यू. 590 (6.72 प्रतिशत) से उपज में बेहतर पायी गई। हाल ही में अनुमोदित किस्म डी.बी.डब्ल्यू. 71 (0.60 प्रतिशत) एवं एच.डी. 3059 (0.51 प्रतिशत) से भी उपज में बेहतर पायी गई। इस प्रजाति का औसत उत्पादन 42.8 कु./है. है। यह प्रजाति अन्य की तुलना में बेहतर ताप सहनशील है। पौधे की औसत ऊँचाई 91 से. मी. (76-105 से. मी.) है तथा फसल की अवधि 121 दिन (104-135 दिन) है। इसमें प्रोटीन की मात्रा 12.9 प्रतिशत



फोटो: रविश चतरथ

है। गुणवत्ता की दृष्टिकोण से देखें तो इसकी चपाती (7.6) भी अच्छी बनती है। इसका हैक्टोलीटर वजन (75.8), पूर्ण ग्लूकन (ग्लू-1) स्कोर (10/10) और प्रति हजार दानों का औसत वजन 35 ग्रा. (22-42 ग्रा.) है।

## कृषि वानिकी में गेहूँ एक सशक्त वैकल्पिक फसल

अनुज कुमार, रणधीर सिंह, सत्यवीर सिंह, रमेश चन्द एवं जे. के. पाण्डेय

भारत एक कृषि प्रधान देश है तथा गेहूँ दूसरी महत्वपूर्ण खाद्यान्न फसल है। दूसरे अग्रिम अनुमान के अनुसार वर्ष 2013-2014 के दौरान अब तक का सर्वाधिक 95.6 मिलियन टन गेहूँ का उत्पादन होने की संभावना व्यक्त की गई है। अतः भारत की खाद्यान्न संबंधित आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए गेहूँ का उत्पादन व क्षेत्रफल बढ़ाना आवश्यक है। क्षेत्रफल बढ़ाना बहुत ही मुश्किल कार्य है। परंतु हाल के वर्षों में हरियाणा के यमुनानगर तथा उत्तर प्रदेश के सहारनपुर जिले में पॉपलर के खेतों में गेहूँ की खेती एक अच्छा विकल्प उभर कर सामने आया है। पहले यहां के किसान हल्दी लगाते थे परन्तु हल्दी की कीमत में उतार-चढ़ाव की वजह से अब यह आर्थिक रूप से लाभकारी विकल्प नहीं है। अतः किसानों ने अन्य विकल्पों की तलाश शुरू की और हाल के वर्षों में गेहूँ एवं गन्ना आर्थिक दृष्टि से अच्छे विकल्प साबित हो रहे हैं। पॉपलर आधारित कृषि वानिकी इन दोनों जिलों के किसानों को आर्थिक दृष्टि से सशक्तिकरण प्रदान करती है। वानिकी की शुरुआत इन जिलों में पिछले 8-10 वर्ष पहले जोर-शोर से हुई है। वैसे यहाँ के किसान पॉपलर और यूकेलिप्टस (सफेदा) की खेती मेंड़ों पर पहले से ही करते





आ रहे हैं परन्तु पॉपलर का मुख्य फसल के रूप में प्रयोग पिछले एक दशक से किया जा रहा है।

**पॉपलर की मुख्य किस्में :** जी 48, डब्ल्यू 22, उदय

**नर्सरी :** खिजराबाद एवं करनाल स्थित नर्सरी से किसान पॉपलर के पौधे खरीदते हैं। हरियाणा सरकार के वन विभाग द्वारा भी रियायती दरों पर नर्सरी उपलब्ध कराई जाती है। वर्तमान में एक पौधे की कीमत 18–20 रुपये है।

**लगाने का खर्च :** आमतौर पर किसान एक एकड़ जमीन में लगभग 200 पौधे लगाते हैं। पर यह संख्या 250 तक पहुँच जाती है क्योंकि खेत में मेंडों पर सघनता से पौधे लगाए जाते हैं। लगाने की मजदूरी 3–4 रुपये प्रति पौधा है।

**दूरी :** किसानों से बातचीत करने के क्रम में यह पता चला कि किसान अपने ट्रैक्टर के हिसाब से एक पौधे से दूसरे पौधे के बीच की दूरी रखते हैं। अतः कई तरह के विकल्प देखने को मिले जैसे 10x10 फुट, 11x11 फुट, 12x12 फुट, 13x13 फुट, 14x14 फुट।

किसान सिर्फ इस बात का ध्यान रखते हैं कि पॉपलर के साथ उगाई जाने वाली अन्य फसलों की बुआई से संबंधित सस्य क्रियाओं में कोई व्यवधान न आए और ट्रैक्टर आसानी से पॉपलर की पंक्तियों के बीच में से गुजर सके।

## सस्य क्रियाएं

किसान पॉपलर की फसल के साथ कोई न कोई दूसरी फसल अवश्य उगाते हैं अतः फसल के साथ की जाने वाली सस्य क्रियाओं का लाभ पॉपलर की मुख्य फसल को भी मिलता रहता है।

**अन्तः फसल :** गेहूँ, गन्ना, बरसीम आदि रबी के मौसम में तथा मक्का, बाजरा तथा चरी खरीफ के मौसम में उगाई जाने वाली मुख्य अन्तः फसलें हैं।

**गेहूँ की मुख्य किस्में :** एच.डी. 2967, डी.बी.डब्ल्यू 88, एच.डी. 3086, डब्ल्यू.एच. 1105, डी.पी. डब्ल्यू. 621–50 आदि की अगेती बीजाई कर किसान अधिक उपज ले सकते हैं। पछेती किस्मों में डी.बी.डब्ल्यू. 90, एच.डी. 3059, डी.बी.डब्ल्यू. 71, डब्ल्यू.एच. 1021, पी.बी.डब्ल्यू. 509 तथा डी.बी.डब्ल्यू. 16 पछेती बुआई के अच्छे विकल्प हैं।



किसानों को इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए कि वे गेहूँ की पुरानी किस्में जैसे पी.बी.डब्ल्यू. 343, डब्ल्यू.एच. 711 आदि की बुआई पॉपलर के साथ न करें। इनमें पीला रतुआ बिमारी की संभावना अतः फसल में और प्रबल हो जाती है। गन्ना काटने के बाद किसान पछेती किस्में लगा सकते हैं। पूसा गोल्ड (डब्ल्यू.आर. 544) किस्म अधिक पछेती बुआई के लिए काफी उपयुक्त पाई गई है।

**कटाई :** पॉपलर को पूर्ण रूप से तैयार होने में 4–6 वर्ष का समय लगता है। अच्छी देखभाल व प्रबंधन से किसान एक लाख रुपये प्रतिवर्ष की औसत आमदनी प्राप्त कर सकता है। तने की मोटाई पर पॉपलर उत्पादकता व कीमत निर्भर करती है।

**उपज:** अच्छी देखभाल करने पर औसत रूप से 700–800 कुंतल/एकड़ की उपज प्राप्त हो जाती है। वैसे तो मूल्य में परिवर्तन होता रहता है परन्तु वर्तमान में 1000–1100 रुपये/कुंतल की दर से पॉपलर बेचा जा रहा है।

**गेहूँ :** अच्छी देखभाल एवं बुआई का समय गेहूँ की उपज निर्धारित करता है। किसानों ने बताया कि गेहूँ की अगेती किस्मों से 18–22 कुं./एकड़ की उपज प्राप्त हो जाती है।



पछेती किस्मों में 16–18 कुंतल/एकड़ की उपज प्राप्त होती है।

### आर्थिक विश्लेषण

एक एकड़ की पॉपलर की खेती में प्रतिवर्ष औसतन 80,000 से 100000 रुपये की आमदनी प्राप्त हो जाती है तथा एक एकड़ गेहूँ से लगभग 20,000–25,000 रुपये की आमदनी होती है। अगर किसान गन्ना लगाता है तो यह आमदनी 50,000 रुपए प्रति वर्ष तक पहुँच सकती है। गेहूँ की फसल के बाद खरीफ मक्का लगाने से आमदनी 30,000 रुपये तक हो जाती है अर्थात् किसान सालाना एक एकड़ भूमि से 1,50,000 से 1,55,000 तक की आमदनी प्राप्त कर सकता है जो किसी भी फसल-चक्र से अधिक नहीं है। अतः गेहूँ आधारित कृषि वानिकी किसानों के लिए आर्थिक रूप से एक सशक्त विकल्प है।

**बाधाएँ :** नील गाय इस क्षेत्र के किसानों की एक प्रमुख समस्या है जिसका निपटारा कृषि विभाग एवं वन विभाग से मिलकर किया जा सकता है।

**निष्कर्ष :** समय के साथ किसानों ने कृषि वानिकी के अन्तर्गत अन्तः फसल के रूप में कई फसलों को अपनाया है परंतु पिछले पाँच वर्षों से गेहूँ एक अच्छे विकल्प के रूप में उभरा है जिसकी लाभप्रदता भी अधिक है। अतः यह आवश्यक हो गया है कि किसानों को कृषि वानिकी के अन्तर्गत प्रयुक्त किस्मों के बारे में बताया जाये ताकि किसान और अधिक उपज ले सकें और अपनी आमदनी को बढ़ा सकें। कृषि वानिकी में अन्तः फसल के रूप में गेहूँ की बुआई गेहूँ का क्षेत्रफल बढ़ाने में भी कारगर सिद्ध होगी।

### जैविक उत्पादों का विकास

रेनु शर्मा एवं अजय वर्मा  
गेहूँ अनुसंधान निदेशालय, करनाल

खाद्यान्न मानव की एक मूलभूत आवश्यकता है। पिछले 40 साल में मनुष्य का खान-पान काफी बदल गया है एवं बेहतर हो गया है। जहाँ लोग पहले जैविक भोजन की खूबियों से वाकिफ नहीं थे और यह सिर्फ विदेशियों की पसंद ज्यादा हुआ करता था, परन्तु अब हालात बदल चुके हैं। अब भारतीय बाजार न सिर्फ ऑर्गेनिक उत्पादों से भरे पड़े हैं,

बल्कि बड़े पैमाने पर जैविक खेती भी की जा रही है। जैविक खेती पैदावार, बचत और सेहत के नजरिए से भी किसानों के लिए फायदेमंद है। लिहाजा किसान जैविक खेती की ओर तेजी से रुख कर रहे हैं। इससे न सिर्फ पैदावार बढ़ती है, बल्कि उत्पादों की गुणवत्ता में भी बढ़ोत्तरी होती है। इतना ही नहीं, जैविक खेती करने वाले किसानों की फसलों को अन्य फसलों की तुलना में कीमत भी ज्यादा मिलती है, जिससे वे आर्थिक रूप से मजबूत हो रहे हैं। वर्ष 2008 तक भारत देश में 8.65 लाख हैक्टर कृषि भूमि पर जैविक खेती हो रही थी, जो देश के कुल 14.2 करोड़ हैक्टर कृषि क्षेत्र का महज 0.61 प्रतिशत है, लेकिन यह जागरुकता का ही नतीजा है कि यह आंकड़ा 2012 तक 20 लाख हैक्टर तक पहुँच जाने की उम्मीद है। भारत में जैविक उत्पादों का कारोबार हर वर्ष दोगुना होता जा रहा है। यह उम्मीद है कि भारत से जैविक खाद्यान्नों का निर्यात 4500 करोड़ रुपये तक पहुँच जाएगा।

भारत में हाल के दिनों में जैविक खेती में वृद्धि होने से जैविक उत्पाद के कारोबार में भी तेजी दिखाई देने लगी है। आज जैविक क्षेत्र प्रगति की ओर अग्रसर दिखाई दे रहा है। दुनिया भर में कुल 30.4 मिलियन हैक्टर भूमि जैविक खेती के लिए इस्तेमाल की जाती है। यही वजह है कि विश्व बाजार में जैविक उत्पाद का कारोबार लगभग 38.6 बिलियन अमेरिकन डॉलर है। वहीं जैविक उत्पादों में भारत की भागीदारी महज 0.2 फीसदी है। सरकार ने देश के कृषि निर्यात को बढ़ाने के लिए 60 कृषि निर्यात क्षेत्रों को 21 राज्यों में स्थापित किया है। निर्यात-आयात नीति में कृषि उत्पादों के निर्यात की बढ़ोत्तरी के लिए प्रयास किये हैं। हाल ही में केन्द्र सरकार ने राष्ट्रीय कृषि नीति की घोषणा की है, जिसमें कृषि निर्यात को बढ़ाकर अर्थव्यवस्था को तेजी से मजबूत बनाने पर जोर दिया है।

देश के मेट्रो शहरों बंगलूर एवं चेन्नई में लगातार जैविक खाद्य पदार्थों के लिए भी लोगों के बीच एक नया क्रेज देखने को मिल रहा है। कुछ लोगों का मानना है कि जैविक खाद्य पदार्थ सिर्फ उच्च वर्गीय समाज के लिए ही हैं। परन्तु अब बंगलूर और चेन्नई जैसे शहरों में जैविक खाद्य पदार्थों एवं सब्जियों के लिए मध्यम वर्ग का एक खास झुकाव देखने को मिल रहा है। अब इस 'फिटनेस फ्रीक' की मांग छोटे शहरों

और महानगरों में रहने वाले मध्यम वर्गीय लोगों के बीच बढ़ती जा रही है।

चेन्नई के मशहूर लोयोला कॉलेज में 'फूड केमिस्ट्री एंड फूड प्रोसेसिंग विभाग' की ओर से आयोजित कार्यक्रम में जैविक सब्जियों के साथ ही जैविक खाद्य पदार्थों के बारे में भी काफी चर्चा की गई। यहां पर मौजूद करीब 50 प्रतिशत लोगों ने माना कि जैविक खाद्य उत्पाद सेहत के लिए सुरक्षित होते हैं। इनमें सभी जरूरी पोषकतत्व भी प्रचूर मात्रा में रहते हैं। इसकी वजह से इसे बढ़ावा दिए जाने की ज्यादा जरूरत है। समारोह में आए लोगों के सामने सिक्किम का उदाहरण देते हुए बताया गया कि यह देश का एक ऐसा राज्य है जहां पर जैविक खेती इतनी बेहतर हालत में है कि राज्य के किसान न सिर्फ सिक्किम के लोगों बल्कि पड़ोसी राज्यों के लोगों की जरूरतों को भी पूरा कर रहे हैं।

अनाज में ज्यादा खनिज पदार्थों लिए जैविक खेती सर्वोत्तम होती है। पालक, बींस हो या टमाटर इनमें जो तत्व पारम्परिक खेती में मिल रहे हैं, जैविक खेती में इससे कई गुना ज्यादा मिलेंगे। ये आंकड़े अमेरिका के एक विश्वविद्यालय ने साबित कर दिए हैं। जैविक खेती की उपयोगिता पर आधारित जानकारी राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान में आयोजित जैविक खेती पर आधारित कार्यशाला में लोगों ने दी। राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान के प्रोफेसर डी.पी. मिश्रा ने बताया कि जिस क्षेत्र की मिट्टी में रसायन का ज्यादा प्रभाव हो गया है, वहां पर आरम्भ में एक दो साल जैविक खेती में उत्पादन थोड़ा प्रभावित होता है। लेकिन बाद में बेहतर उत्पादन मिलना शुरू हो जाता है।

## धान की सीधी बीजाई

विकास चौधरी, गांव तरावड़ी, जिला-करनाल

मैं पिछले 4 वर्षों से लगातार धान की सीधी बीजाई कर रहा हूँ। धान की सीधी बीजाई करने के बहुत से फायदे हैं जैसे समय पर बीजाई, मजदूरी लागत की बचत, पानी की 30 प्रतिशत तक बचत, डीजल की बचत, पारंपरिक विधि से बोई गई धान की तुलना में 7 दिन पहले पकना, कद्दू करने से भूमि की संरचना खराब होती है परन्तु इस विधि में भूमि की संरचना यथावत रहती है। धान की सीधी बीजाई करने



से पहले खेत का लेजर लैंड लेवलर से समतल होना बहुत जरूरी है अगर खेत समतल नहीं होगा तो अंकुरण में कमी आ सकती है।

धान की बीजाई के दो तरीके हैं; सुखे खेत में बीजाई एवं बत्तर में बीजाई। अगर हम सूखे में बीजाई करते हैं तो हमें बीज की गहराई 1-2 से.मी. रखनी है और बीजाई करते ही तुरन्त हल्का पानी लगाना है। पानी लगाने के बाद जब खेत में जैसे ही पैर रुकने लगे तो इस खेत में पेंडीमैथालीन (1200-1300 मि.ली.) का स्प्रे करना चाहिए ताकि खेत में खरपतवार का जमाव न हो सके। स्प्रे करते वक्त बहुत सी सावधानियाँ बरतनी है जैसे स्प्रे करने वाला नोजल सही हो, हवा न चल रही हो और खेत में उचित नमी हो। अगर हम इन सभी बातों का ध्यान नहीं रखेंगे तो हम खरपतवार का समुचित नियंत्रण समय पर नहीं कर पाएंगे। स्प्रे करने के 36 घण्टे के अन्दर हमें हल्का पानी लगाना है ताकि खेत में नमी बनी रहे। धान का जमाव पानी लगाने के बाद आ जाता है। इसके बाद जब हमारा धान 18-23 दिन का हो जाये तो हमें जमने के बाद वाले खरपतवारनाशी का स्प्रे करना है। अगर अंकुरण पूर्व खरपतवारनाशी ने ठीक से काम किया है





तो अन्य दवाईयों की आवश्यकता नहीं पड़ती है। धान की सीधी बीजाई वाली फसल गिरती नहीं है। यह विधि मुख्यतः सीएसआर-30, पूसा 1121, संकर धान एवं कम अवधि में तैयार होने वाली धान में पूरी तरह कामयाब है।



इस विधि से उगाई गई सभी किस्मों का उत्पादन कद्दू कर उगाई गई धान के बराबर ही आता है। अगर धान की सीधी बीजाई (तप्पड़ में बीजाई) में गोहूँ का 20 प्रतिशत बचा हुआ पराल रख दें तो 50 प्रतिशत तक पानी बचा सकते हैं, इससे हमारे खेत में नमी बनी रहेगी जिससे खरपतवार भी कम आएंगे। अगर कोई किसान स्प्रे करने में ढील बरतता है तो धान की सीधी बीजाई में बहुत नुकसान हो सकता है, यहाँ तक कि उसकी पैदावार आधी भी हो सकती है क्योंकि स्प्रे में ढील या कोताही का मतलब खरपतवार को बुलावा देना है। बाद में आप जितना मर्जी स्प्रे कर लीजिए खरपतवार खत्म नहीं होगा।

## गोहूँ में उगाएं खीरा-ककड़ी वर्गीय सब्जियों की अंतर-रिले फसल

एस.सी. राणा<sup>1</sup>, राजेन्द्र सिंह छोकर<sup>2</sup> एवं अनुज कुमार<sup>2</sup>

<sup>1</sup>भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय केन्द्र, करनाल

<sup>2</sup>गोहूँ अनुसंधान निदेशालय, करनाल

**रिले फसल उत्पादन विधि:** रिले फसल उत्पादन की इस पद्धति में गोहूँ (आधार फसल) की बुआई के समय ही खीरा-ककड़ी वर्गीय सब्जियों (उत्तेरा फसल) के लिए भी योजना बना ली जाती है। गोहूँ की बुआई हेतु खेत तैयार करते समय 5-6 मीटर की दूरी पर 45 सें. मी. चौड़ी व 30-40 सें.मी. गहरी नालियां बना कर छोड़ देते हैं। नालियों के बीच में गोहूँ की बुआई की जाती है। गोहूँ की बुआई



(अक्टूबर-दिसंबर) से लेकर फरवरी तक इन नालियों को खाली रखते हैं। इस अवधि के दौरान इन नालियों का उपयोग तोरीया, सरसो, पालक, मेथी, मूली, गाजर आदि अंतः-फसल उगाकर भी किया जा सकता है। अगर गोहूँ की बुआई हेतु खेत तैयार करते समय नालियां नहीं बनाई गई हों तो फरवरी माह के अंत में (गोहूँ की कटाई से 40-45 दिन पहले) 5-6 मीटर की दूरी पर नालियां तैयार करते हैं। नालियों के किनारों पर 50-60 सें.मी. की दूरी पर थावले बना लेते हैं तथा नालियों को खरपतवार रहित कर लिया जाता है। नालियों में तैयार किए गए इन थावलों में गोहूँ की कटाई से 30-35 दिन पहले (पाला पड़ने का खतरा समाप्त होने पर) बीज लगाते हैं। अगर बेल वर्गीय सब्जियों की पौध पॉलीथीन बैग में तैयार की गई है तो नालियों में पौध का रोपण गोहूँ की कटाई से 20-25 दिन पहले करते हैं। पौध रोपाई के तुरंत बाद हल्की सिचाई करना आवश्यक होता है। पॉलीथीन बैग में पौध तैयार करने हेतु 15 से.मी. लम्बे तथा 10 से.मी. चौड़ाई वाले पॉलीथीन (100-200 गॉज) के थैलों में मिट्टी, रेत व खाद का मिश्रण बनाकर भर लेते हैं। प्रत्येक पॉलीथीन बैग की तली में 4-5 छोटे छेद कर लिए जाते हैं तथा मिश्रण भरते समय यह ध्यान रखते हैं कि



प्रत्येक पॉलीथीन बैग के किनारे पर 2-3 सें.मी. जगह पानी देने के लिए खाली रहे। इन थैलों में बीज बोने से पहले बीज को फफूंदनाशक से उपचारित कर लें। प्रत्येक थैले में 2-3 उपचारित बीज जनवरी-फरवरी माह में लगाए जाते हैं। बीजों की बुआई के बाद थैलों में हल्की सिंचाई फव्वारे की मदद से करते हैं। बीज अंकुरित होने पर प्रत्येक थैले में एक स्वस्थ पौधा छोड़कर बाकी पौधे निकाल देते हैं। पॉलीथीन बैग में तैयार किये जाने वाले पौधों को टंड से बचाने हेतु आवश्यकतानुसार पॉलीथीन घर का प्रयोग किया जाता है। खेत में पौधे लगाने की इस विधि में खाद व उर्वरकों का प्रयोग, निराई-गुड़ाई व सिंचाई आदि क्रियाएं नालियों के अंदर ही की जाती हैं। इस विधि में नालियों के बीच की जगह में सिंचाई नहीं की जाती जिससे फल गीली मिट्टी के सम्पर्क में नहीं आते तथा खराब होने से बच जाते हैं।

**लाभ :** गेहूँ में ककड़ी वर्गीय सब्जियों की रिले फसल उत्पादन विधि का उपयोग करने से जून माह के द्वितीय पखवाड़े तक खरबूजा, तरबुज, घीया व পেठा की पैदावार क्रमशः 150, 250, 170 एवं 200 कुंतल प्रति हैक्टर होती है जबकि गेहूँ कटाई के उपरांत मूंग व लोबिया उगाने पर क्रमशः 10 कुंतल (बीज) एवं 32 कुंतल (फलियां) प्रति हैक्टर की दर से प्राप्त होती हैं। धान-गेहूँ फसल प्रणाली के अंतर्गत विभिन्न फसलों के आर्थिक विश्लेषण में पाया गया कि धान-गेहूँ, धान-गेहूँ-मूंग, धान-गेहूँ-लोबिया व धान-गेहूँ-खरबूज फसल चक्र से क्रमशः 1.71, 2.10, 2.41 तथा 3.44 लाख रुपये प्रति हैक्टर की दर से सकल आय प्राप्त हुई। धान-गेहूँ, धान-गेहूँ-मूंग, धान-गेहूँ-लोबिया व धान-गेहूँ-खरबूज फसल चक्र से क्रमशः 142.62, 175.35, 200.83 तथा 241.91 कुंतल प्रति हैक्टर गेहूँ समतुल्य पैदावार प्राप्त हुई।

## इंटरनेट से जानें निदेशालय के बारे में

सुमन लता

गेहूँ अनुसंधान निदेशालय, करनाल के बारे में और यहां हो रहे अनुसंधान कार्य के बारे में कम्प्यूटर पर इंटरनेट पर विस्तृत जानकारी उपलब्ध है।

यह जानकारी किसानों, शोधकर्ताओं और वैज्ञानिकों के लिए उपयोगी है। प्रयोगकर्ता इस साइट पर नई गतिविधियों, वर्तमान प्रशिक्षण, संगोष्ठियों और अन्य गतिविधियों के बारे में जान सकते हैं। गेहूँ की नई किस्मों के बारे में जानकारी AICW & BIP के तहत प्राप्त की जा सकती है। कार्यालय में नए रोजगार के बारे में भी इस साइट से जानकारी प्राप्त की जा सकती है। यह वेबसाइट दैनिक आधार पर नियमित रूप से संशोधित की जाती है।

इस वेबसाइट के शीर्ष मेनू निम्नलिखित हैं:

- घर
- हमारे बारे में
- हमसे सम्पर्क करें
- ई-मेल
- प्रकाशन
- AICW&BIP परियोजना
- गेहूँ रिसर्च जर्नल

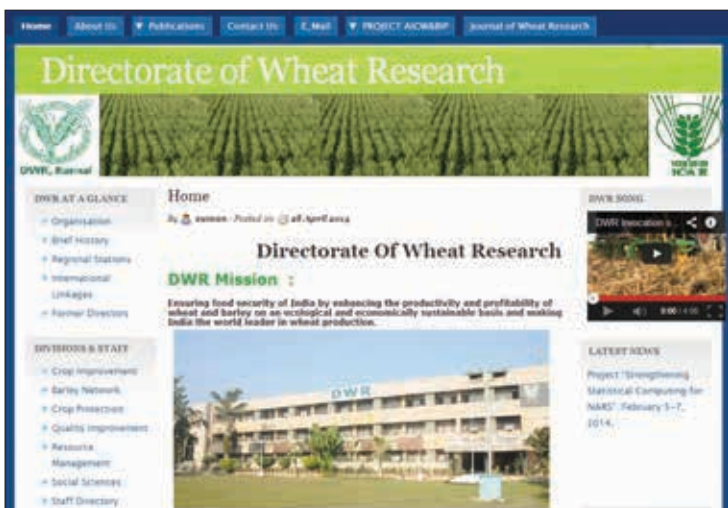
गेहूँ संस्थान के प्रकाशनों जैसे कि वार्षिक रिपोर्ट, गेहूँ और जौ के न्यूजलेटर, क्षेत्रीय स्टेशनों के समाचार, हिन्दी प्रकाशन आदि सामग्री प्रकाशन के शीर्ष मेनू में मौजूद है। गेहूँ रिसर्च जर्नल के बारे में विस्तृत विवरण शीर्ष मेनू के JWR पृष्ठ पर 11 कड़ियों में मौजूद है। AICW&BIP परियोजना के बारे में विस्तृत जानकारी 10 कड़ियों में शीर्ष मेनू पर रखी गई हैं।

संस्थान के वेबसाइट के मुख्य पृष्ठ पर निम्नलिखित शीर्षकों के अंतर्गत सारी जानकारी उपलब्ध है।

- ताजा खबर
- वर्तमान घटनाएं
- त्वरित लिंक
- संस्थान झलक
- संस्थान प्रभाग और स्टाफ

अन्य जानकारी के लिए उपभोगकर्ता इंटरनेट की वेबसाइट [www.dwr.res.in](http://www.dwr.res.in) के मुख्य पृष्ठ पर आवश्यक लिंक का चयन करें और एक माउस क्लिक से विस्तृत जानकारी कंप्यूटर स्क्रीन पर पायें।





## गेहूँ की नवीनतम प्रजातियाँ

प्रजाति	क्षेत्र	बुआई की दशा की अवस्था	विकसित करने वाले संस्थान का नाम
डी.बी.डब्ल्यू. 88	उत्तर पश्चिमी मैदानी क्षेत्र	सिंचित, समय से बुआई	डी.डब्ल्यू.आर., करनाल
डी.बी.डब्ल्यू. 90	उत्तर पश्चिमी मैदानी क्षेत्र	सिंचित, देर से बुआई	डी.डब्ल्यू.आर., करनाल
एच.डी. 3086 (पूसा गौतमी)	उत्तर पश्चिमी मैदानी क्षेत्र	सिंचित, समय से बुआई	भा.कृ.अनु.सं., नई दिल्ली
एच.डी. 3090 (पूसा अमूल्य)	महाराष्ट्र और कर्नाटक	सिंचित, देर से बुआई	भा.कृ.अनु.सं., नई दिल्ली

### निदेशालय अब फेसबुक पर



<https://www.facebook.com/pages/Directorate-of-Wheat-Research-Karnal-India>

## लेखकों के लिए दिशा-निर्देश

गेहूँ एवं जौ संदेश में छपने हेतु लोकप्रिय लेख साफ-साफ हस्तलिखित या डबल स्पेसिंग में टाईप किए हुए (तालिका, आकृति, फोटोग्राफ सहित) दो पृष्ठों से अधिक नहीं होने चाहिए। लेख में लेखक/लेखकों का पूरा नाम, पता व ई-मेल अवश्य लिखें। लेखकों से निवेदन है कि वे अपने लोकप्रिय लेख 31 मई तक पहले अंक (जनवरी-जून) के लिए एवं 30 नवम्बर तक दूसरे अंक (जुलाई-दिसम्बर) के लिए भेजें।

### सम्पादक मंडल

अनुज कुमार, रणधीर सिंह, सत्यवीर सिंह एवं इन्दु शर्मा

तकनीकी सहायता

जे.के. पाण्डेय

### बुक पोस्ट

छ:माही मुद्रित सामग्री

सेवा में,

प्रेषक

गेहूँ अनुसंधान निदेशालय

पोस्ट बॉक्स 158, अग्रसेन मार्ग,

करनाल - 132 001 (हरियाणा), भारत

परियोजना निदेशक, गेहूँ अनुसंधान निदेशालय, करनाल द्वारा प्रकाशित

प्रकाशन तिथि:- मई, 2014

मुद्रित प्रति - 1000